आत्मानुशासन का विकास जरूरी : आचार्य महाश्रमण

सरदारशहर 3 सितम्बर, 2010

आचार्य महाश्रमण ने दैनिक प्रवचन में कहा कि आत्मानुशासन का विकास जरूरी है। जो स्वयं पर अनुशासन नहीं करता है उसे दूसरों के अनुशासन में रहना पड़ता है। इसलिए यह श्रेयस्कर है कि स्वयं आत्मा को जीते आत्मा का संयम करें और आत्मानुशासन का विकास करें। उन्होंने कहा कि आत्मा अरूपी है। आत्मा को आंख से नहीं देखा जा सकता। आत्मा को देखने के लिए आत्मस्थ बनना होगा, आत्मा के द्वारा आत्मा को देखना होगा।

आचार्य महाश्रमण ने देश के कोने-कोने में चलने वाली तपस्याओं का उल्लेख करते हुए कहा कि तपस्या आत्मा को जीतने का माध्यम है। तपस्या के दौरान मन, वाणी और काया का संयम करते हैं तो आत्मा का भी संयम हो जाता है। जो अपनो आत्मा को जीत लेता है उसे कोई परिजित नहीं कर सकता। इस मौके पर ललित डागा ने तपस्या के महत्व पर गीत की प्रस्तुति दी।

इससे पूर्व मुनि दिनेश कुमार ने सभा को संबोधित किया, संचालन मुनि मोहजीत कुमार ने किया।

- शीतल बरड़िया (मीडिया संयोजक)